**Vatnik Soup** @vatniksoup

Nov 28, 2026 · 15 tweets · vatniksoup/status/2126571797411762574

Today, on Holodomor Remembrance Day, we publish our first Historical Memory Dossier, dedicated to the millions of Ukrainians who died in 1932–33 and to those who survived to bear witness.

1/15



Millions died of hunger in a land known for its fertile soil. The Holodomor devastated communities across Soviet Ukraine and left a history that the authorities would spend decades trying to conceal.

2/15



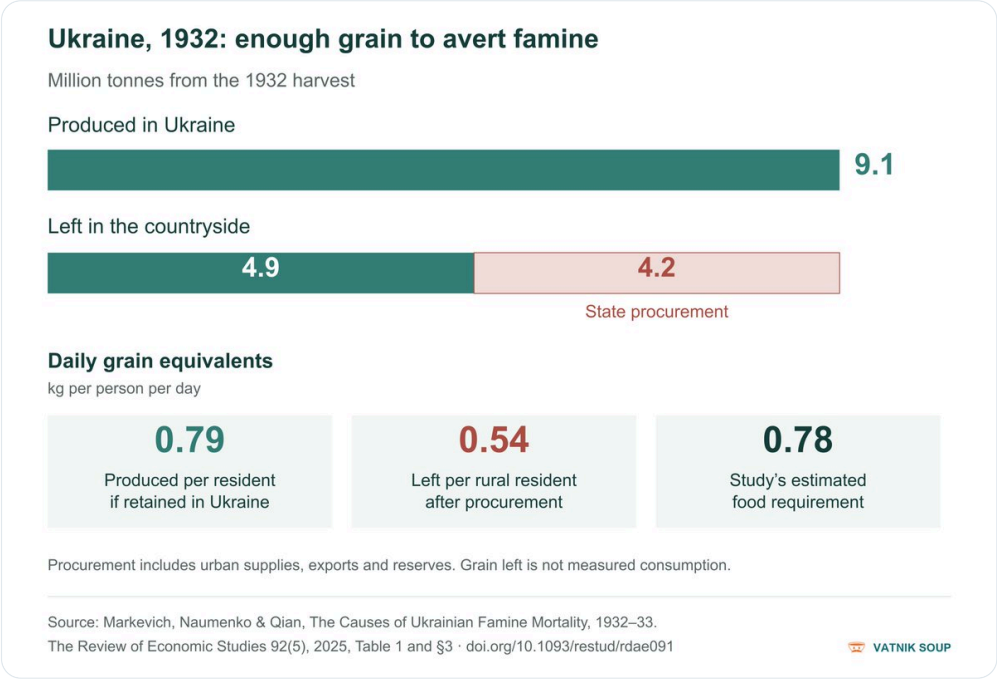


Under Stalin, forced collectivisation stripped peasants of their farms, livestock and control over their harvests. Grain requisitions and confiscations of other food left households without the means to survive.

3/15







Villages were blacklisted. Trade was banned, supplies removed and food seized. Collective punishment deprived people of what they needed to live, as officials enforced procurement demands through coercion.

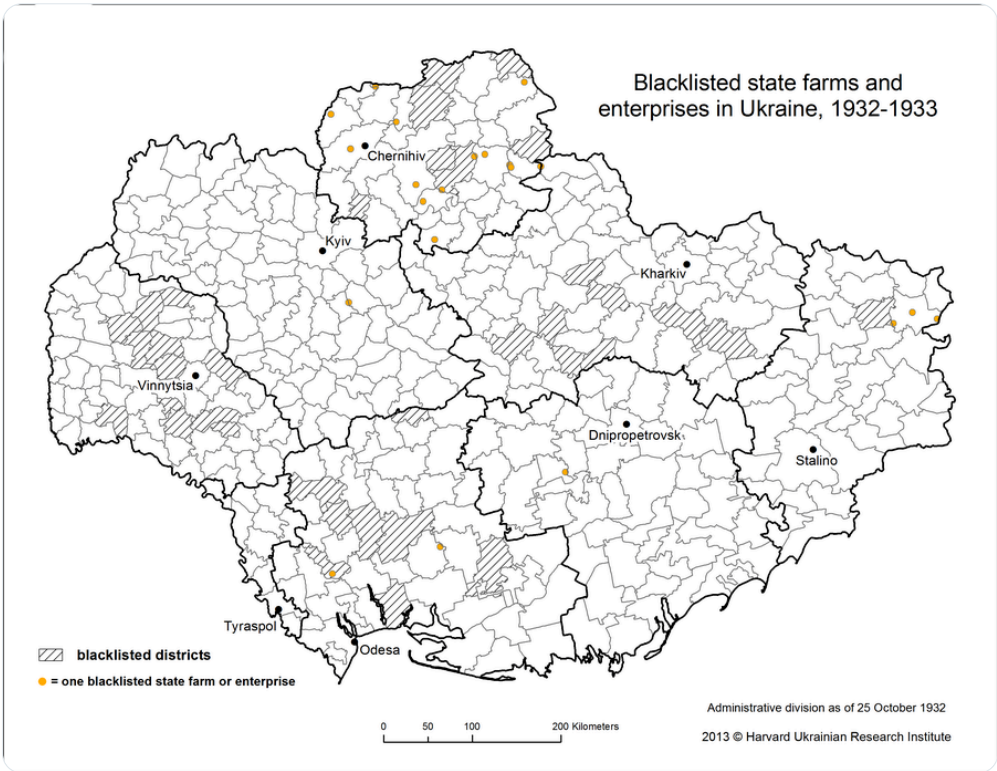


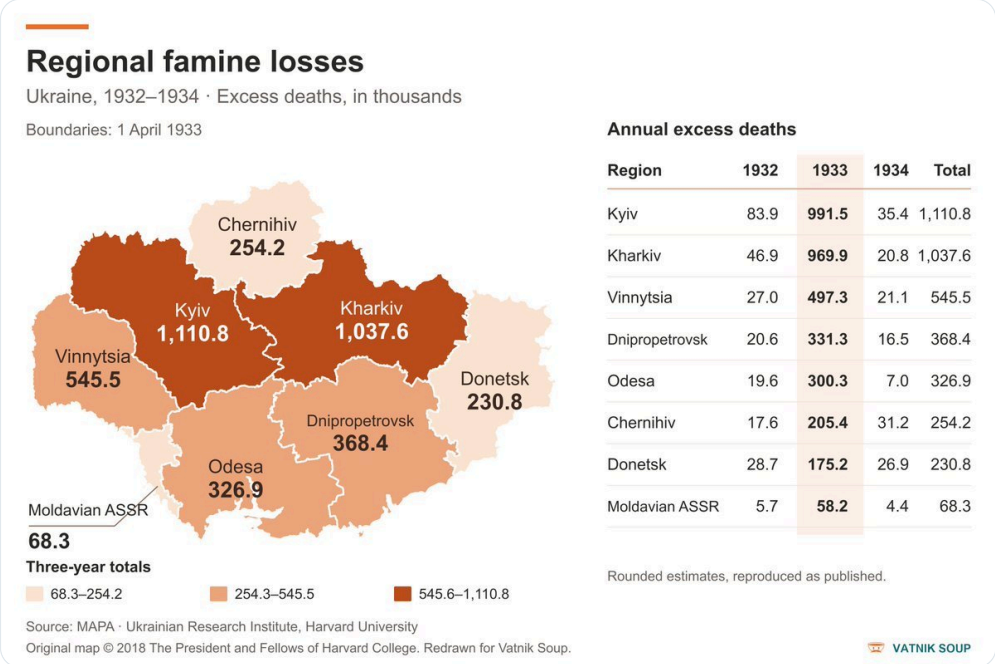


In January 1933, Stalin and Molotov ordered measures to stop peasants leaving Ukraine and the North Caucasus in search of food. People trying to escape starvation were intercepted and sent back.



The famine unfolded alongside attacks on Ukrainian writers, teachers, religious leaders and cultural institutions. Starvation and repression together devastated the communities sustaining Ukrainian national life.

6/15



The Holodomor was genocide. Deliberate deprivation became an instrument in the assault on Ukrainian nationhood. Understanding that crime requires examining what the leadership knew, the decisions it took and the people it targeted.

7/15



We examine forced collectivisation and central planning alongside authoritarianism and imperialism. Economic failure offers no alibi for the regime's decisions to seize food, block escape and silence warnings while people starved.

8/15

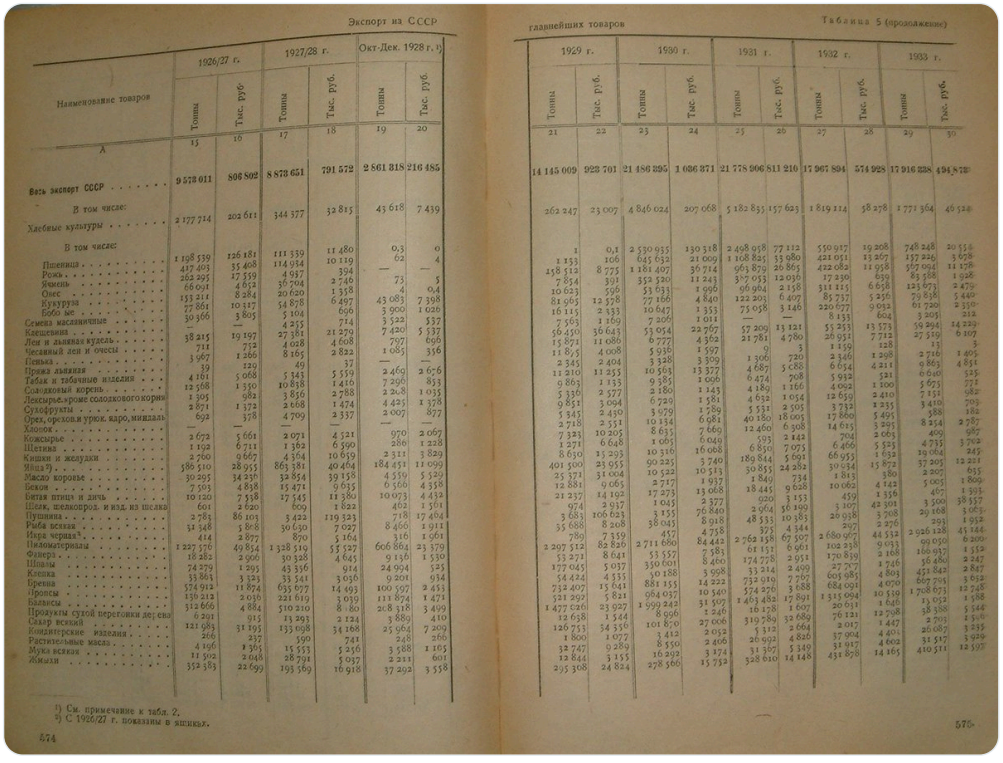

Экспорт из СССР главнейших товаров

Таблица 5 (продолжение)

| Наименование товаров | 1926/27 г. Тонны | 1926/27 г. Тыс. руб. | 1927/28 г. Тонны | 1927/28 г. Тыс. руб. | Окт.-Дек. 1928 г.[1] Тонны | Окт.-Дек. 1928 г.[1] Тыс. руб. | 1929 г. Тонны | 1929 г. Тыс. руб. | 1930 г. Тонны | 1930 г. Тыс. руб. | 1931 г. Тонны | 1931 г. Тыс. руб. | 1932 г. Тонны | 1932 г. Тыс. руб. | 1933 г. Тонны | 1933 г. Тыс. руб. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| А | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |
| **Весь экспорт СССР** | **9 573 011** | **806 802** | **8 873 651** | **791 572** | **2 861 318** | **216 485** | **14 145 009** | **923 701** | **21 486 395** | **1 036 371** | **21 778 906** | **811 210** | **17 967 894** | **574 928** | **17 916 338** | **494 873** |
| В том числе: | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Хлебные культуры | 2 177 714 | 202 611 | 344 377 | 32 815 | 43 618 | 7 439 | 262 247 | 23 007 | 4 846 024 | 207 068 | 5 182 835 | 157 623 | 1 819 114 | 58 278 | 1 771 364 | 46 524 |
| В том числе: | | | | | | | | | | | | | | | | |
| Пшеница | 1 198 539 | 126 181 | 111 339 | 11 480 | 0,3 | 0 | 1 | 0,1 | 2 530 935 | 130 318 | 2 498 958 | 77 112 | 550 917 | 19 208 | 748 248 | 20 558 |
| Рожь | 417 403 | 35 408 | 114 934 | 10 119 | 62 | 4 | 1 133 | 106 | 645 632 | 21 009 | 1 108 825 | 33 980 | 421 051 | 13 267 | 157 226 | 3 678 |
| Ячмень | 262 295 | 17 559 | 4 937 | 394 | — | — | 158 512 | 8 775 | 1 181 407 | 36 714 | 963 879 | 26 865 | 422 082 | 11 958 | 567 094 | 11 178 |
| Овес | 66 091 | 4 652 | 36 704 | 2 746 | 73 | 5 | 7 854 | 391 | 352 520 | 11 243 | 367 053 | 12 036 | 17 230 | 639 | 83 588 | 1 928 |
| Кукуруза | 153 211 | 8 284 | 20 620 | 1 358 | 4 | 0,4 | 10 623 | 596 | 53 633 | 1 996 | 96 964 | 2 158 | 311 115 | 6 658 | 123 673 | 2 479 |
| Бобовые | 77 861 | 10 317 | 54 878 | 6 497 | 43 083 | 7 398 | 81 965 | 12 578 | 77 166 | 4 840 | 122 203 | 6 407 | 85 737 | 5 256 | 79 838 | 5 440 |
| Семена масличные | 30 366 | 3 805 | 5 104 | 696 | 3 900 | 1 026 | 16 115 | 2 333 | 10 647 | 1 353 | 75 058 | 3 146 | 220 677 | 9 032 | 61 720 | 2 350 |
| Клещевина | — | — | 4 255 | 714 | 3 522 | 537 | 7 563 | 1 169 | 7 206 | 1 011 | — | — | 8 133 | 604 | 3 205 | 212 |
| Лен и льняная кудель | 38 215 | 19 197 | 27 381 | 21 279 | 7 420 | 5 537 | 56 450 | 36 643 | 53 054 | 22 767 | 57 209 | 13 121 | 55 253 | 13 573 | 59 294 | 14 229 |
| Чесанный лен и очесы | 711 | 752 | 4 028 | 4 608 | 797 | 696 | 15 871 | 11 086 | 6 777 | 4 362 | 21 781 | 4 780 | 26 951 | 7 712 | 27 519 | 6 107 |
| Пенька | 3 967 | 1 266 | 8 165 | 2 822 | 1 085 | 356 | 11 875 | 4 008 | 5 936 | 1 597 | 9 | 3 | 1 159 | 128 | 13 | 3 |
| Пряжа льняная | 39 | 129 | 49 | 37 | — | — | 2 345 | 2 404 | 3 328 | 3 309 | 1 306 | 720 | 2 346 | 1 298 | 2 716 | 1 405 |
| Табак и табачные изделия | 4 161 | 5 068 | 5 343 | 5 559 | 2 469 | 2 676 | 11 210 | 11 255 | 10 563 | 13 377 | 4 687 | 5 088 | 6 654 | 4 211 | 9 863 | 4 851 |
| Солодковый корень | 12 568 | 1 350 | 10 838 | 1 416 | 7 296 | 853 | 9 863 | 1 133 | 9 385 | 1 096 | 6 474 | 708 | 5 932 | 521 | 6 640 | 525 |
| Лексарье, кроме солодкового корня | 1 305 | 982 | 3 856 | 2 788 | 2 208 | 1 035 | 5 336 | 2 577 | 2 180 | 1 143 | 4 189 | 1 166 | 4 092 | 1 100 | 5 675 | 772 |
| Сухофрукты | 2 871 | 1 372 | 2 668 | 1 474 | 4 425 | 1 378 | 9 851 | 3 094 | 6 720 | 1 581 | 4 632 | 1 054 | 12 659 | 2 410 | 7 151 | 982 |
| Орех, орехов. и урюк. ядро, миндаль | 692 | 378 | 4 709 | 2 337 | 2 007 | 877 | 5 345 | 2 430 | 3 979 | 1 789 | 5 531 | 2 505 | 3 732 | 1 235 | 3 410 | 709 |
| Хлопок | — | — | — | — | — | — | 2 718 | 2 551 | 10 134 | 6 981 | 40 180 | 18 005 | 17 860 | 5 495 | 588 | 182 |
| Кожсырье | 2 672 | 5 661 | 2 071 | 4 521 | 970 | 2 067 | 7 323 | 10 205 | 8 635 | 7 669 | 12 460 | 6 308 | 14 615 | 3 295 | 8 254 | 2 787 |
| Щетина | 1 192 | 6 711 | 1 362 | 6 590 | 286 | 1 228 | 1 271 | 6 648 | 1 065 | 6 049 | 593 | 2 142 | 704 | 2 063 | 409 | 987 |
| Кишки и желудки | 2 760 | 9 667 | 4 364 | 10 659 | 2 311 | 3 829 | 8 630 | 15 293 | 10 316 | 16 068 | 6 850 | 7 075 | 6 466 | 5 525 | 4 735 | 3 702 |
| Яйца[2] | 586 510 | 28 955 | 863 381 | 40 464 | 184 451 | 11 099 | 401 500 | 23 955 | 90 225 | 3 740 | 189 844 | 5 691 | 66 955 | 1 632 | 19 064 | 245 |
| Масло коровье | 30 295 | 34 236 | 32 854 | 39 158 | 4 559 | 5 529 | 25 371 | 31 004 | 10 522 | 10 513 | 30 855 | 24 282 | 30 934 | 15 872 | 37 205 | 12 221 |
| Бекон | 7 503 | 4 838 | 15 471 | 9 635 | 6 566 | 4 358 | 12 881 | 9 065 | 2 717 | 1 937 | 1 849 | 734 | 1 813 | 380 | 2 207 | 635 |
| Битая птица и дичь | 10 120 | 7 538 | 17 545 | 11 380 | 10 073 | 4 432 | 21 237 | 14 192 | 17 273 | 13 068 | 18 445 | 9 628 | 10 062 | 4 142 | 5 005 | 1 809 |
| Шелк, шелкопрод. и изд. из шелка | 601 | 2 620 | 609 | 1 822 | 462 | 1 561 | 974 | 2 937 | 1 045 | 2 377 | 920 | 3 153 | 459 | 1 356 | 467 | 1 393 |
| Пушнина | 2 783 | 86 103 | 3 422 | 119 323 | 718 | 17 464 | 3 683 | 106 623 | 3 155 | 76 840 | 2 964 | 56 199 | 3 107 | 42 301 | 3 500 | 38 557 |
| Рыба всякая | 31 348 | 5 868 | 30 630 | 7 027 | 8 466 | 1 911 | 35 688 | 8 208 | 38 045 | 8 918 | 48 533 | 10 383 | 26 938 | 3 708 | 29 168 | 3 063 |
| Икра черная[3] | 414 | 2 877 | 870 | 5 164 | 316 | 1 961 | 789 | 7 359 | 457 | 4 758 | 375 | 4 344 | 297 | 2 276 | 293 | 1 952 |
| Пиломатериалы | 1 227 576 | 49 854 | 1 328 519 | 55 527 | 606 864 | 23 379 | 2 297 512 | 82 826 | 2 711 680 | 84 442 | 2 762 158 | 67 507 | 2 680 967 | 44 532 | 2 926 128 | 45 144 |
| Фанера | 18 282 | 2 906 | 30 328 | 4 645 | 9 136 | 1 530 | 53 271 | 8 641 | 53 557 | 7 583 | 61 151 | 6 961 | 102 238 | 9 033 | 99 050 | 6 200 |
| Шпалы | 74 279 | 1 295 | 43 356 | 914 | 24 994 | 525 | 177 045 | 5 037 | 350 601 | 8 460 | 174 778 | 2 951 | 170 839 | 2 168 | 166 937 | 1 552 |
| Клепка | 33 863 | 3 323 | 33 541 | 3 036 | 9 201 | 934 | 54 424 | 4 535 | 50 188 | 3 998 | 33 214 | 2 499 | 27 727 | 1 746 | 56 480 | 2 247 |
| Бревна | 574 912 | 11 874 | 635 677 | 14 493 | 100 597 | 2 453 | 732 407 | 15 641 | 881 155 | 14 222 | 732 919 | 7 767 | 605 985 | 4 803 | 451 842 | 2 847 |
| Прорезы | 136 212 | 2 036 | 221 619 | 3 039 | 111 874 | 1 471 | 521 297 | 5 821 | 984 037 | 10 540 | 574 276 | 3 688 | 684 091 | 4 070 | 667 795 | 3 652 |
| Балансы | 312 666 | 4 884 | 510 210 | 8 180 | 208 318 | 3 499 | 1 477 026 | 23 927 | 1 999 242 | 31 507 | 1 463 482 | 17 891 | 1 315 094 | 10 539 | 1 708 673 | 12 748 |
| Продукты сухой перегонки дерева | 6 291 | 915 | 13 293 | 2 124 | 3 889 | 410 | 12 638 | 1 544 | 8 996 | 1 246 | 16 178 | 1 607 | 20 631 | 1 646 | 13 052 | 1 588 |
| Сахар всякий | 121 983 | 31 195 | 133 098 | 34 168 | 25 964 | 7 209 | 126 753 | 34 356 | 101 870 | 27 006 | 319 789 | 32 689 | 76 121 | 12 798 | 38 388 | 5 544 |
| Кондитерские изделия | 266 | 237 | 590 | 741 | 248 | 266 | 1 800 | 1 077 | 3 412 | 2 052 | 5 312 | 2 664 | 2 017 | 1 447 | 2 703 | 1 596 |
| Растительные масла | 4 196 | 1 365 | 15 553 | 5 256 | 3 588 | 1 105 | 32 747 | 9 289 | 8 550 | 2 406 | 26 992 | 4 826 | 37 904 | 4 401 | 26 087 | 3 235 |
| Мука всякая | 11 502 | 2 048 | 28 791 | 5 037 | 2 211 | 601 | 12 844 | 3 155 | 16 292 | 3 174 | 31 367 | 5 349 | 31 917 | 4 602 | 31 517 | 3 929 |
| Жмыхи | 352 383 | 22 699 | 193 569 | 16 918 | 37 292 | 3 558 | 295 308 | 24 824 | 278 566 | 15 752 | 328 610 | 14 148 | 431 878 | 14 165 | 410 511 | 12 597 |

[1]) См. примечание к табл. 2.
[2]) С 1926/27 г. показаны в ящиках.

574

575

The Soviet authorities denied the famine. Gareth Jones and other witnesses challenged the official account. Walter Duranty, a proto-vatnik at The New York Times, minimised the catastrophe and excused the regime.

9/15

**Vatnik Soup**
@vatniksoup · **Follow**

In today's Vatnik Soup, we introduce Walter Duranty, a British-born journalist. He's best known for winning a Pulitzer Prize for his Soviet reporting, and for denying the Holodomor while millions of Ukrainians starved.

1/10



1:16 PM · Nov 6, 2026

929 Reply Copy link

Read 14 replies



# RUSSIANS HUNGRY, BUT NOT STARVING

## Deaths From Diseases Due to Malnutrition High, Yet the Soviet Is Entrenched.

## LARGER CITIES HAVE FOOD

## Ukraine, North Caucasus and Lower Volga Regions Suffer From Shortages.

## KREMLIN'S 'DOOM' DENIED

### Russians and Foreign Observers In Country See No Ground for Predictions of Disaster.

By WALTER DURANTY.
Special Cable to THE NEW YORK TIMES.

MOSCOW, March 30.—In the middle of the diplomatic duel between Great Britain and the Soviet Union over the accused British engineers there appears from a British source a big scare story in the American press about famine in the Soviet Union, with "thousands already dead and millions menaced by death from starvation."

Its author is Gareth Jones, who a former secretary to David Lloyd George and who recently spent three weeks in the Soviet Union and reached the conclusion that the country was "on the verge of a terrific smash," as he told the writer.

Mr. Jones is a man of a keen and active mind, and he has taken the trouble to learn Russian, which he speaks with considerable fluency, but the writer thought Mr. Jones's judgment was somewhat hasty and asked him on what it was based. It appeared that he had made a forty-mile walk through villages in the neighborhood of Kharkov and had found conditions sad.

I suggested that that was a rather inadequate cross-section of a big country, but nothing could shake his conviction of impending doom.

**Predictions of Doom Frequent.**

The number of times foreigners, especially Britons, have shaken rueful heads as they composed the Soviet Union's epitaph can scarcely be computed, and in point of fact it has done the Soviet Union incalculable harm since the day when William C. Bullitt's able and honest account of the situation was shelved and negatived during the Versailles Peace Conference by reports that Admiral Kolchak, White Russian leader, had taken Kazan—which he never did—and that the Soviet power was "on the verge of an abyss."

Admiral Kolchak faded. Then General Denikin took Orel and the Soviet Government was on the verge of an abyss again, and General Yudenich "took" Petrograd. But where are Generals Denikin and Yudenich now?

A couple of years ago another British "eyewitness" reported a mutiny in the Moscow garrison and "rows of corpses neatly piled in Theatre Square," and only this week a British news agency revealed a revolt of the Soviet Fifty-fifth Regiment at Dauria, on the Manchurian border. All bunk, of course.

This is not to mention a more regrettable incident of three years ago when an American correspondent discovered half the Ukraine flaming with rebellion and "proved" it by authentic documents eagerly proffered by Rumanians, which documents on examination appeared to relate to events of eight or ten years earlier.

**Saw No One Dying.**

But to return to Mr. Jones. He told me there was virtually no bread in the villages he had visited and that the adults were haggard, gaunt and discouraged, but that he had seen no dead or dying animals or human beings.

I believed him because I knew it to be correct not only of some parts of the Ukraine but of sections of the North Caucasus and lower Volga regions and, for that matter, Kazakstan, where the attempt to change the stock-raising nomads of the type and the period of Abraham and Isaac into 1933 collective grain farmers has produced the most deplorable results.

It is all too true that the novelty and mismanagement of collective farming, plus the quite efficient conspiracy of Feodor M. Konar and his associates in agricultural commissariats, have made a mess of Soviet food production. [Konar was executed for sabotage.]

But—to put it brutally—you can't make an omelette without breaking eggs, and the Bolshevist leaders are just as indifferent to the casualties that may be involved in their drive toward socialization as any General during the World War who ordered a costly attack in order to show his superiors that he and his division possessed the proper soldierly spirit. In fact, the Bolsheviki are more indifferent because they are animated by fanatical conviction.

Since I talked with Mr. Jones I have made exhaustive inquiries about this alleged famine situation. I have inquired in Soviet commissariats and in foreign embassies with their network of consuls, and I have tabulated information from Britons working as specialists and from my personal connections, Russian and foreign.

**Disease Mortality Is High.**

All of this seems to me to be more trustworthy information than I could get by a brief trip through any one area. The Soviet Union is too big to permit a hasty study, and it is the foreign correspondent's job to present a whole picture, not a part of it. And here are the facts:

There is a serious food shortage throughout the country, with occasional cases of well-managed State or collective farms. The big cities and the army are adequately supplied with food. There is no actual starvation or deaths from starvation, but there is widespread mortality from diseases due to malnutrition.

In short, conditions are definitely bad in certain sections—the Ukraine, North Caucasus and Lower Volga. The rest of the country is on short rations but nothing worse. These conditions are bad, but there is no famine.

The critical months in this country are February and March, after which a supply of eggs, milk and vegetables comes to supplement the shortage of bread—if, as now, there is a shortage of bread. In every Russian village food conditions will improve henceforth, but that will not answer one really vital question—What about the coming grain crop?

Upon that depends not the future of the Soviet power, which cannot and will not be smashed, but the future policy of the Kremlin. If through climatic conditions, as in 1921, the crop fails, then, indeed, Russia will be menaced by famine. If not, the present difficulties will be speedily forgotten.

Series on "Tammany's Poor Relations" Continues Today on Pa

NIGHT EDITION ★★★★★ Wall Street Closing Prices Fair today and Thursday. (See P. 23)

# New York Evening Post

NIGHT EDITI ★★★ Wall Street Closing

THREE 3 CENTS

WEDNESDAY, MARCH 29, 1933

THREE

## FAMINE GRIPS RUSSIA, MILLIONS DYING, IDLE ON RISE, SAYS BRITON

### Gareth Jones, Lloyd George Aid, Reports Devastation

### TOURS FARM AREAS, FINDS FOOD GONE

### Asserts Reds Arrest Britons to Check Public Wrath—Peasants "Wait for Death"

By H. R. KNICKERBOCKER

Evening Post Foreign Service

Reich Jews Ask End of Protests

Real Reprisal Order Puts Victims in Perils — Pupils Barred From Schools

Today's developments in Hitler Germany and Austria follow:

Nazis Jews Germany into peace by final capitol action, are end of Foreign "atrocity" protests.

Another Nazis move "world boycott" of Germany will not recognize any agreements signed by Chancellor Hitler.

By H. R. KNICKERBOCKER

Evening Post Foreign Service

BERLIN, March 29.—Germany's Jewish population was thrown into a state of extreme fear today as the final declaration of economic reprisals against them in Germany for the anti-Nazis atrocity campaign was put into effect.

The final action of handing the Jews over to hostile treatment as the result of their attempt to arouse foreign countries against Germany was taken by the Nazi Government when it announced a decree providing that all Jewish civil servants are to be dismissed from their posts by April 30.

Further measures directed against the Jews are to be taken, it is announced, by the Ministry of Interior, which has ordered the immediate dismissal of all Jewish officials in the Prussian police service.

Jewish pupils in the public schools have been barred from the classrooms, and Jewish lawyers have been forbidden to practice in the courts of Bavaria.

### Lehman Plea on Beer Bill Stirs Storm

Both Parties in Both Houses Launch Bitter Attack

### GOVERNOR BLAMES LOBBYISTS' "SWARM"

In Appeal to Legislature Says Selfish Interests Menace Repeal

By JEROME L. SMITH

Chief Correspondent of Evening Post

ALBANY, March 29.—Governor Lehman suffered today the support of his last bid in a personal address to a joint session of the Legislature, charging "mercenary and selfish" interests have sought to gain control of legislation of the new beverage. His appeal was to save a scrutinizing check upon any bill to manufacture and distribute.

The Democratic executive in the meeting, today Thursday and Monday legislature, let his attack.

Party officials declared a caucus may that Democrats can effectively block the Republican attempt to override the Senate or Governor's bill, on which five-sixths vote and pre-Democratic organization, including the State Tax Association, headed by Public Service Commissioner Maltbie, have declared the Governor's bill is the best measure possible under the circumstances.

Governor Lehman's Appeal

Appearing at 10:30 A.M. before the Senate and Assembly Finance Committees, which had previously held a public hearing on the Governor's bill, Governor Lehman said:

"I am appearing before you at a special request of Senator Wilson T. Lynn to whom I have spoken in regard to the bill. I have also had the pleasure of discussing the matter with Assemblyman Joseph D. Carlino, Majority Leader, and with Assemblyman Irving Ives, Minority Leader.

"I have also had the pleasure of discussing the matter with Senator Thomas C. Desmond, Majority Leader, and with Senator Seabury C. Mastick, Minority Leader.

"I have also had the pleasure of discussing the matter with Senator Joseph A. McGinnies, Chairman of the Senate Finance Committee, and with Assemblyman Irwin Steingut, Chairman of the Assembly Ways and Means Committee



Friday, March 31, 1933 THE EVENING

# FAMINE RULES RUSSIA

## The 5-year Plan Has Killed the Bread Supply

*By GARETH JONES*

**Mr. Jones is one of Mr. Lloyd George's private secretaries. He has just returned from an extensive tour on foot in Soviet Russia. He speaks Russian fluently—and here is the terrible story the peasants told him.**

A FEW days ago I stood in a worker's cottage outside Moscow. A father and a son, the father a Russian skilled worker in a Moscow factory, and the son a member of the Young Communist League, stood glaring at one another.

The father, trembling with excitement, lost control of himself and shouted at his Communist son: "It's terrible now. We workers are starving. Look at Chelyabinsk, where I once worked. Disease there is carrying away numbers of us workers and the little food there is is uneatable. That is what you have done to our Mother Russia."

The son cried back: "But look at the giants of industry which we have built. Look at the new tractor works. Look at the Dniepostroy. That construction has been worth suffering for."

"Construction indeed!" was the father's reply. "What's the use of construction when you have destroyed all that's best in Russia?"



MR. GARETH JONES.

"*The cattle have nearly all died. How can we feed the cattle when we have only fodder to eat ourselves?*"

"And your horses?" was the question I asked in every village I visited. The horse is now a question of life and death, for without a horse how can one plough? And if one cannot plough, how can one sow for the next harvest? And if one cannot sow for the next harvest, then death is the only prospect in the future.

The reply spelled doom for most of the villages. The peasants said: "Most of our horses have died and we have so little fodder that the remaining ones are scraggy and ill."

If it is grave now and if millions are dying in the villages, as they are, for I did not visit a single village where many had not died, what will it be like in a month's time? The potatoes left are being counted one by one, but in so many homes the potatoes have long run out. The beet, once used as cattle fodder, may run out in many huts before the new food comes in June, July and August, and many have not even beet.

The situation is graver than in 1921, as all peasants stated emphatically. In that year there was famine in several great regions, but in most parts the peasants could live. It was a localised famine, which had many millions of victims, especially along the Volga. But to-day the famine is everywhere, in the formerly rich Ukraine, in West Russia, in Central Asia, in North Caucasia—everywhere.



CHILD BEGGARS IN MOSCOW

What of the towns? Moscow as yet does not look so stricken, and no one staying in Moscow would have an inkling of wh

For decades, public discussion of the Holodomor was suppressed in the Soviet Union. Survivors, families and diaspora communities preserved its memory. Their accounts helped later generations recover a history the state had concealed.


НЕ ЗАБУДЕМО НАРОДОВБИВЧИЙ ГОЛОД УКРАЇНІ 1932-1933
НЕ ЗАБУДЕМО НАРОДОВБИВЧИЙ ГОЛОД УКРАЇНІ 1932-1933
WE SHALL NEVER FORGET THE 7,000,000 UKRAINIANS SLAUGHTERED BY MOSCOW
RUSSIA



Russia still denies that the Holodomor was genocide while glorifying Stalin. In March 2026, its Foreign Ministry circulated a claim that the Holodomor was “fabricated”. A relief honouring Stalin returned to Moscow’s metro in 2025.

11/15





**David Sacks** ALL IN
@DavidSacks

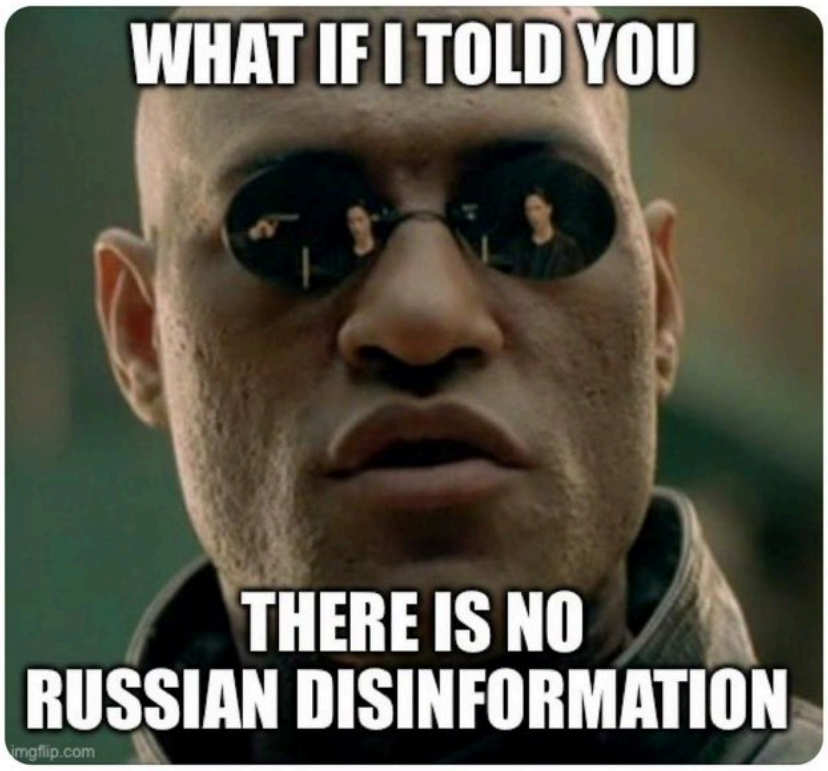


**Readers added context**

Russian disinformation has a long and rich history.

It includes intentional lying about:
- Holodomor
- Katyń Massacre
- current war in Ukraine

cepa.org/article/kremli...
hi-storylessons.eu/disinformation...
bbc.com/news/world-eur...
en.wikipedia.org/wiki/Russian_d...

Add another post



Ukraine marks this day while defending itself against Russia’s invasion. Remembrance honours the dead and affirms the right of Ukrainians to preserve their history, language and national life.

12/15



The dossier explores the Holodomor through history, economics and political thought, drawing connections with Russia’s war against Ukraine and the continuing struggle over Ukrainian identity and memory.

13/15



Read the full dossier:

The Holodomor Genocide: Starvation and the Erasure of a Nation.

14/15

Vatnik SOUP

**Papers | Vatnik Soup**

Vatnik Soup: Your most comprehensive resource on pro-Kremlin disinformation and propaganda.

https://vatniksoup.com/en/papers

Truth matters. History matters. Memory matters.

At Vatnik Soup, we conduct rigorous research and debunk Kremlin propaganda used to justify aggression and occupation, including reminders from history to combat vatnik revisionism.

Support our work:

15/15




**Fight Disinformation With Us: Support our Work | Vatnik Soup**

Vatnik Soup: Your most comprehensive resource on pro-Kremlin disinformation and propaganda.

https://vatniksoup.com/en/support-our-work/

• • •